3224

स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं मेरठ के क्रान्तिकारी

(34)

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की
कला संकाय के अन्तर्गत इतिहास विषय में पी–एच०डी०
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का सारांश

शोध निर्देशक :

डा0 अजयपाल सिंह
अध्यक्ष/एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
सनातन धर्म पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
मुजफ्फरनगर

शोधकर्ती :

सचिन कुमार
एम0फिल0

शोध केन्द्र

सनातन धर्म पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मुजफ्फरनगर

2021

शोध सारांश

भारत का स्वतन्त्रता संग्राम बड़े त्याग एवं बलिदानों की गाथाओं से भरा पड़ा है। इंग्लैड वासी अग्रेंज भारत में एक व्यापारी के वेश में आया था लेकिन भारतीय शासकों के आपसी द्वेष ने उन्हें भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करने का मौका प्रदान कर दिया। 1757ई0 के प्लासी युद्ध को अंग्रेजी कम्पनी ने धोखे से जीतकर सर्वप्रथम अपना उपनिवेश स्थापित करने का प्रयास किया। इसके पश्चात 1764ई0 के बक्सर युद्ध को भी इसी श्रेणी में रखा जाता है। मेरठ में घटित 1857ई0 की क्रान्ति से पहले अनेकों संघर्ष सामन्तो, छोटे राजाओं एवं नवाबों द्वारा भी किये गये लेकिन उनको राष्ट्रीय आन्दोलनों की संज्ञा नही दी गई बल्कि स्थानीय स्तर का संघर्ष ही समझा गया। आरम्भ में अंग्रेजी शक्ति ने कृषि क्षेत्र पर हमला किया तथा किसानों से जबरन राजस्व वसूल किया इस कारण भारतीय कृषक वर्ग की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई।

ब्रिटिश शासक वर्ग द्वारा किये गये शोषण के साथ–साथ प्रकृति ने भी शोषण करना प्रारम्भ कर दिया। उन्नसवी शताब्दी में अनेक दुर्भिषओ का सामना कृषक वर्ग ने किया और इस कारण जन–धन की बहुत बड़ी हानि हो गई लेकिन अंग्रेज उत्पीड़क ने रहम नही किया और राजस्व वसूली जस की तस चलती रही। जहां मानव को खाने तक को अन्न भी मयस्सर नही था वह किस प्रकार कर चुकाये। इस औपनिवेशिक शोषण ने भारतीय जनमानस में विद्रोह की भावना को जन्म दिया। अग्रेंजो के आर्थिक शोषण के बारे में दादा भाई नौराजी ने एक प्रपत्र लिखा, जिसमें शोषण का कारण कम्पनी को माना गया और कम्पनी ने किसानों को खेती छोड़ने पर विवश कर दिया। प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन से पूर्व ब्रिटिश शासक वर्ग के विरुद्ध तीन रुपो में विद्रोह हुए। आदिवासी विद्रोह, किसान आन्दोलन, नागरिक विद्रोह

इसके अतिरिक्त कुछ सशस्त्र विद्रोहों ने भी जन्म लिया, इसके द्वारा भी भारतीय लोगों ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी जुए को अपने कंधे से उतार फेकने का हर सम्भव प्रयास किया। आन्दोलन के शुरुआती दौर में उस पर धर्म का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। आम जन से धर्म के नाम पर अपील की जाती थी। महाराष्ट्र प्रान्त में चापेकर बन्धुओं ने एक धार्मिक संस्था भी निर्मित की थी जिसका नाम "हिन्दु धर्म संरक्षिणी

सभा' था। इसके अतिरिक्त गणेश उत्सव व शिवाजी उत्सव भी इसी श्रेणी में आते थे। लार्ड लिटन जैसे अंग्रेजो ने अपने कृत्य से भारतीय जनमानस में और असन्तोष पैदा कर दिया उसने आर्म्स एक्ट बनाकर भारतीयों पर शस्त्र रखने पर प्रतिबन्ध आरोपित कर दिया। इसी कड़ी में पूना में फैला प्लेग भी है जिसमें अग्रेंज अधिकारी भारतीयों के घरों में जबरन घुसकर भारतीय महिलाओं से दुर्व्यवहार करते थे, इस घटना से क्रोधित होकर ही प्लेग अधिकारी रैड और आयर्स्ट की हत्या कर दी गई।

1857ई0 के विद्रोह को दबा अवश्य दिया गया था परन्तु समाप्त प्रायः नही हुआ था। 1915ई0 में पुनः यह ज्वाला भड़क उठी और इसने उत्तर भारत को अपने आगोश में ले लिया रासबिहारी बोस व सान्याल जैसे क्रान्तिकारियों ने मिलकर मेरठ की पावन भूमि को अपनी गतिविधियों का केन्द्र स्थापित किया। मेरठ की धरा को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि तब मिली जब श्रमिक संघो के विरुद्ध यहाँ मुकदमा चलाने का निर्णय लिया गया। मेरठ की भूमि को ब्रितानी शासक बम्बई व कलकत्ता की अपेक्षा अधिक शान्त मानते थे। इसका एक अन्य कारण यह भी था कि मेरठ शहर जूरी व्यवस्था के अर्न्तगत नही आता था। इस मुकदमें से जवाहर लाल नेहरु सरीखे नेता भी अपना जुड़ाव महसूस करते थे। इस मुकदमें में ब्रिटेन के दो श्रमिक नेता को भी सम्मिलित किया गया।

काकोरी शेर के नाम से प्रसिद्ध विष्णु शरण दुबलिश के योगदान को कैसे भूल सकते है। दुबलिश जी शुरुआती समय में महात्मा गांधी जी के अनुयायी थे। लेकिन गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस लेने की घटना ने उन्हे पथ परिवर्तन के लिए मजबूर कर दिया और वह एक क्रान्तिकारी के पथ पर चल पड़े और एच0आर0ए0 के सदस्य बन गये। काकोरी रेल डकैती के मुकदमें में उन्हे 10 वर्ष की सजा के लिए इलाहाबाद की नैनी जैल में रख गया। देश की आजादी के पश्चात उन्होने कांग्रेस संगठन से जुड़ने का निर्णय लिया और वह सरधना लोकसभा क्षेत्र से सदस्य निर्वाचित हुए।

क्रान्तिवीरों ने अपनी गतिविधियों हेतु कुछ संगठनों को भी खड़ा किया इसमें प्रमुख रुप से अनुशीलन समिति, युगान्तर समिति नौजवान भारत सभा तथा उत्तर भारत में हिन्दूस्तान रिपब्लिकन एसोसिऐशन थी। इन संगठनों से जुड़ने के नियम बड़े कठोर थे। इसके अतिरिक्त कुछ वीरांगनाओं ने भी अपने संगठन स्थापित किए इनमें प्रमुख नाम

"महिला संघ" का आता है। इस संगठन की स्थापना श्रीमती मायादास ने कानपुर में की थी।

आजादी के दीवानों पर कुछ षडयन्त्र केस भी आरोपित किये गये। इनमें बनारस षडयंत्र केस, काकोरी षडयंत्र केस, मैनपुरी षडयंत्र केस। इन मुकदमों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने क्रान्तिवीरों को कठोर से कठोर सजा दी गई। इनमें प्रमुख नाम सान्याल जी, विष्णुशरण दुबलिश जी, गेंदालाल दीक्षित व अशफाक उल्ला खां आदि थे।

शोध–प्रबन्ध में किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह तथा पक्षपात से बचने की पूर्ण कोशिश की गई है।